nation is adversely affected. Because of the vulnerability of the coastline the Government of India must think of an alternate rail line in the interior of Andhra Pradesh, off die sea coast. I would suggest that a new railway line from Nadikudi to Venkatagiri via Vinukonda, Darsi, Pondili and Kanigiri, may be constructed by the South Central Railway. Madam, I understand that survey for the aforesaid line has already been made.

Madam, you would appreciate if I say that this Government must rise to the occasion and construct a new railway line in the backward areas where there is no rail link. I would like to bring to die notice of this august House that after independence, the Government of India could lay hardly 8,000 kms. of railway line when compared to the Britishers who could lay 55,000 kms. of railway line within a span of 96 years. I, dierefore, appeal once again that an alternate railway line from Madras to Vijayawada may immediately be constructed so that the backward areas in die districts of Guntur, Prakasam and Nellore in Andhra Pradesh, can be developed early.

Similar action may also be taken for developing North-Eastern States whose capitals are not connected with Delhi. I would once again request die hon. Railway. Minister to consider and include my proposal for construction of a new railway line from Madras to Vijayawada in the next Budget for die year 1997-98. Thank you.

RE, CLOSURE OF ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY FOLLOWING DEATH OF A STUDENT IN POLICE FIRING ON 1/2ND OCTOBER, 1996

श्री मोहम्मद आज़म खान (उत्तर प्रदेश): मैडम, मैं एक बहुत ही अहम मुद्दा सरकार के सामने और सदन के सामने रखने वाला हूं। गुलाम हिन्दुस्तान में बहुत कम तालीम थी और शायद हमारे अनपढ़ होने का, अनऐजुकेटिड होने का अंग्रेजों ने ज्यादा फायदा उठाया, गुलामी के दिन ज्यादा लम्बे हुए और उनकी साम्राज़ियत ज्यादा दिन हिन्दुस्तान में चली। ऐसे जमाने में, जब लोग तालीम की तरफ बहुत कम नजर रखते थे, दो लोग इस मुल्क में ऐसे पैदा हुए जिन्होंने बड़ी तकलीफें उठाकर एक नया पैग़ाम समाज को दिया - मदन मोहन मालवीय और सर सैयद अहमद साहब। दोनों ने अंग्रेज़ों जैसी ज़ालिम साम्राज़ियत से अपनी तालीम के प्रोग्राम को मनवाने में कामयाबी हासिल की और इस तरह एक यूनिवर्सिटी बनारस में कायम हुई जिसे बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के नाम से जाना गया और दूसरी यूनिवर्सिटी अलीगढ़ में कायम हुई, जिसे अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के नाम से जाना गया।

बहुत से नशेबोफराज़ आए और अफसोस यह है कि आजाद हिंदुस्तान में जैसे-जैसे सरकारें बदलीं और नए-नए दल सत्ता में आए, उनके देखने का तरीका बदलता चला गया। एक वक्त वह आया जब अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का माइनोरिटी कैरेक्टर खत्म हुआ और फिर लोग सड़कों पर उतरकर आए और रेस्टोरेशन ऑफ माइनोरिटी कैरेक्टर हुआ। आम तौर पर हर सेंट्रल यूनिवर्सिटी में सुप्रीम गवर्निंग बॉडी कोर्ट होती है। अलीगढ़ में भी ऐसा ही है। वाईस-चासंलर ने चयन के लिए कोर्ट 5 नाम देती है। ऐक्ज़ीक्यूटिव काऊंसिल उन 5 में से 3 नामों का चुनाव करती है और ये 3 नाम फिर विज़िटर को जाते हैं जो कि राष्ट्रपति महोदय हैं। उसमें से एक अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का वाईस-चासंलर होता है।

महोदया, यह एक विडंबना ही है कि बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी के बनते वक्त पंडित मदन मोहन मालवीय ने खुद अपनी कौम से और अंग्रेजों से मुकाबला करके इस यूनिवर्सिटी को बनवाया ठीक उसी तरह अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के लिए सर सैयद अहमद खान ने भी अपने लोगों से मुकाबला किया। मसलन उन्हें एक पार्सल मिला, जिसमें एक जूतों का हार था और एक खत था जिसमें लिखा था कि "सर सैयद अहमद, चूंकि तुम क्रिस्टान हो गए हो या ईसाई हो गए हो, तुम यह हार अपने गले में पहन लो"। लाहौर के इज़लास में जब सर सैयद अहमद यूनिवर्सिटी के लिए चंदा लेने के लिए खड़े हुए तो लोगों ने उन पर पत्थर और जूते फेंकना शुरू कर दिया। उन्होंने वजह पूछी तो लोगों ने कहा कि - "सर सैयद अहमद, चूंकि तुम काफिर हो गए हो, इसलिए तुम्हें मुसलमानों के इदारे को कायम करने का हक नहीं है और हम तुम्हें कोई पैसा नहीं देंगे"। उन सर सैयद अहमद ने अपनी ही कौम के पत्थर खाते हुए यह कहा कि क्या इस्लाम किसी काफिर को मुसलमान होने का इज़ाज़त नहीं देता? यह कहकर उन्होंने "ला इल्लाह इल्लल्लाह, मुहम्मदु-र-रसूलल्लाह" कहकर उन्होंने लोगों के गुस्से को ठंडा कर दिया। तारीख इस बात की गवाह है कि उस जलसे में जो औरतें बहुत गुस्से में आई थीं, उन्होंने अपने कानों के बुंदे निकालकर सर सैयद अहमद की झोली में डाल दिए। सर सैयद

अहमद ने तवायफों से चंदा लिया। लोगों ने कहा कि तुम रंडी का पैसा लगाओगे? सर सैयद अहमद ने कहा कि मुझे इस इदारे के लिए गुसलखाने और पाखाने बनवाने हैं, यह पैसा मैं वहां लगाऊंगा।

उन्हें एक पार्सल मिला जिसमें लिखा था कि यह जूते का हार तुम अपने गले में डाल लेना। सर सैयद अहमद ने उस खत लिखने वाले की वसीयत के मुताबिक, जो अब शायद नहीं होगा इस दुनिया में, उस जूते के हार को अपने गले में डाला, उसे बाजार में फरोख़्त किया। यह हार 3 पैसे में बिका जिसमें से एक पैसे का खत उन्होंने लिखा और जवाब में लिखा कि "तुमने जैसा लिखा था, मैंने वैसा ही किया लेकिन इस हार को मैंने बाजार में बेच दिया। इससे मुझे 3 पैसे मिले जिसमें से एक पैसे का मैं खत लिख रहा हूं और 2 पैसे मैं साईंटिफिक सोसायटी में तुम्हारे नाम से बतौर चंदे के दाखिल कर रहा हूं"। जो इदारा इतनी कुर्बानियों से बना हो, आज उसकी क्या हालत हो रही है? महोदया, 2 अक्टूबर, जिसे हम बाबा-ए-कौम की पैदाइश का दिन मानते हैं, उस दिन जब बच्चों ने यह कहा कि खाने में फूड प्वाइजनिंग हो गई है, वे इदारे के मुखिया से मिलने गए तो वाईस-चांसलर ने उनके साथ कैसा व्यवहार किया?

महोदया, जो वाईस-चांसलर कश्मीर में रहा है, जिसने कश्मीर के आतंकवाद को खत्म करने का दावा किया था, वह एक अकेला वाईस-चासंलर है पूरे हिंदुस्तान में जो अपने साथ कम से कम 15-20 ब्लैक कमांडो लेकर चलता है, वह अपने आप में एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस के लिए एक कलंक है। उन्होंने न सिर्फ लड़कों को मरने के लिए छोड़ दिया बल्कि एक मौके पर ऐसा हुआ कि खुद वाईस-चांसलर ने स्टूडेंट्स यूनियन के सेक्रेटरी के माथे पर अपना लाइसेंस्ड रिवाल्वर निकालकर रख दिया। वह ऐसा वाईस-चांसलर है जो लड़कों की विपदा सुनने के बजाय कि उन्हें फूड-प्वाइजनिंग हो गई है, पुलिस को बुलाता है। महोदया, कोठी से 2 हजार मीटर के फसाले पर एक लड़का जिसका नाम नदीम था, जो आजमगढ़ का रहने वाला था, उसकी पीठ में गोली मारी जाती है।

उपसभापति: थोड़ा संक्षेप में बोल दीजिए। आपका मामला तो पुलिस फॉयरिंग के बारे में है।

श्री मोहम्मद आज़म खान: वही मैं कह रहा था। महोदया, जिस लड़के की पीठ में गोली मारी जाती है, वह लड़का वहीं पर मर जाता है, उसकी लाश सारी रात वहीं पडी रहती है और यूनिवर्सिटी का वाईस-चांसलर जो यूनिवर्सिटी छोड़कर चला गया है, उस लड़के को लाश को उठवाने तक की व्यवस्था नहीं करता। वाईस-चांसलर का यह कहना है कि यह स्टूडेंट्स के आपसी झगड़े का परिणाम है जब कि कुछ अन्य लोगों का कहना है कि यह लड़का पुलिस की गोली से मारा गया है। इन दोनों में विरोधाभास है। जो लड़का मारा गया है वह एम.एस.सी. फाईनल ईयर का मैरिटोरियस स्टूडेंट था और जिन लड़कों को रेस्टीकेट किया गया है, वे सब टॉपर्स हैं।

इसे लेकर न सिर्फ यूनिवर्सिटी कैम्पस में बेचैनी है बल्कि खुद मुसलमानों के अंदर और उन हिन्दुओं के अंदर जो हिन्दुस्तान में सैक्युलरिज्म को जिन्दा और बाकी देखना चाहते हैं और एक ऐसा इदारा जो बड़ी बदनामियों के घेरे में है जिसके बारे में यह समझा जाता होगा कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में कोई हिन्दू भाई या दूसरी कौम के लोग नहीं पढ़ते, वहां के बारे में इस सदन को बताना जरुरी होगा कि मेडिकल फेकल्टी में 70 से लेकर 75 परसेंट तक स्टूडेंट नॉन मुस्लिम हैं। साईंस फेकल्टी और इंजीनियरिंग कॉलेज में वहां 60 से लेकर 70 परसेंट तक स्टूडेंट नॉन मुस्लिम हैं। लेकिन नाम उसका अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के नाम से है। इसमें यकीनन नफरतों के पत्थर पड़ते हैं लेकिन आज हम इस सदन से और सरकार से यह जरुर जानना चाहते हैं कि वहां का वाईस चांसलर जो ब्लैक कमांडो लेकर चलता हो, एक ऐसा वाईस चांसलर जिसकी बजह से वह लड़का मारा गया हो ...(व्यवधान)

उपसभापति: अभी मुझे आज़म साहब, I have got many other names here.

श्री मोहम्मद आज़म खान: दरसल मैं इस सरकार से कहना चाहता हूं कि उस कैम्पस के बाहर के लोग यह चाहते हैं कि दो अक्तूबर की रात को चली हुई गोली के हादसे की सी.बी.आई. जांच होनी चाहिए। जो विक्टमाइज उस स्टूडेंट को हो रहा है वह खत्म होना चाहिए। यह यूनिवर्सिटी जो कि बहुत दिनों से बंद है उस यूनिवर्सिटी को फौरन खोलकर स्टूडेंट का एकेडमिक कैरियर खराब नहीं होना चाहिए। बहुत-बहुत शुक्रिया।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी (बिहार): मैडम, मैं [illegible] चाहता हूं कि [illegible] जो [illegible] है उसको मैं जानता हूं, जो [illegible] से मारा गया ...(व्यवधान)

†[مولانا عبید اللہ خاں اعظمی: میڈم - میں بتلانا چاہتا ہوں کہ وہ بچہ جو مرا ہے اسکو میں جانتا ہوں جو بری طرح سے مارا گیا ... "مداخلت" ...]

उपसभापति: उन्होंने बहुत तफसील से बतला दिया है।...(व्यवधान)

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी: इसमें मामले की जांच हो ताकि दूध का दूध और पानी का पानी साफ हो और उस बच्चे के खानदान के लोगों को इंसाफ मिले। यूनिवर्सिटी के कानूनी माहौल को जो बरबाद किया जा रहा है, कानून का माहौल फिर से आबाद हो। धन्यवाद।

[مولانا عبید اللہ خاں اعظمی: اس میں معاملے کی جانچ ہو تاکہ دودھ کا دودھ اور پانی کا پانی صاف ہو - اور اس بچے کے خاندان کے لوگوں کو انصاف ملے - یونیورسٹی کے قانونی ماحول کو جو برباد کیا جا رہا ہے - قانون کا ماحول پھر سے آباد ہو - شکریہ]

श्री ईश दत्त यादव (उत्तर प्रदेश): मैडम्, मैं भी इसका समर्थन करता हूं। वह लड़का हमारे शहर का था और मेरिटोरियस स्टूडेंट था और वह पुलिस की गोली से मारा गया। इसलिए आज़म खान साहब ने जो कहा है, मैं चाहता हूं कि उसकी जांच हो और वाईस चांसलर फौरन हटाया जाए ...(व्यवधान)

उपसभापति: बहुत हो गया। उन्होंने यही तो बोला है। कहिए, मैं उनकी हर बात का समर्थन करती हूं। ...(व्यवधान)

श्री ईश दत्त यादव: मैं वाईस चांसलर को तुरन्त हटाने की मांग करता हूं। अगर वह नहीं हटाया जाएगा तो वहां यूनिवर्सिटी में पठन-पाठन का काम नहीं हो सकता। उसकी उच्चस्तरीय जांच कराई जाए। वह लड़का जो मारा गया है बहुत ही मेरिटोरियस था। उसको मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूं, वह मेरे पास का रहने वाला है। ...(व्यवधान)

PROF. SAIFUDDIN SOZ (JAMMU AND KASHMIR): I have a point of order.

मैडम्, जहां तक आज़म खान साहब ने यूनिवर्सिटी की तारीफ बताई, वह बड़े अच्छे अल्फाज में बताई। मैं उनके साथ मुताफिक हूं। लेकिन उन्होंने तकरीबन अपने अल्फाज में वाइस चांसलर के खिलाफ जजमेंट दिया जिस पर मुझे ऐतराज है। हमारे रूल में यह है कि जो शख्स आपके सामने नहीं है ...(व्यवधान) वहां के वाईस चांसलर जो हैं और उनके खिलाफ उन्होंने जजमेंट दे दिया ...(व्यवधान)

उपसभापति: यहां किसी का नाम नहीं लेते। आप नाम ले रहे हैं ...(व्यवधान)

श्री सैफुद्दीन सौज़: यह सही नहीं है कि कोई जजमेंट दे कि वाईस चांसलर खराब है, उनको हटाया जाए ...(व्यवधान) मैं कहता हूं कि जांच कीजिए ...(व्यवधान) ऐसा करना किसी मेम्बर को इजाजत नहीं देता। ...(व्यवधान)

उपसभापति: सौज़ साहब, जरा तशरीफ रखिए ...(व्यवधान) आज़म साहब, आपने बोल दिया है, आप बैठिए। ...(व्यवधान)

PROF. SAIFUDDIN SOZ: Anything against the Vice-Chancellor should be removed from the record. Have you had the inquiry done?

उपसभापति: एक मिनट बैठिए, आप भी बैठ जाइए। ...(व्यवधान) काफी समय इस पर दिया। बहुत से नाम अभी लिस्ट में हैं और दूसरे मसलों पर मामला उठाना चाहते हैं। सवाल यह है कि एक बच्चा मरा है, सरकार उसकी इंक्वायरी करे कि किस तरह से मरा। उसमें जो भी दोषी साबित हो, चाहे कोई भी हो उसकी इंक्वायरी हो। जो भी उसके साथ कानून के जरिए सलूक होना चाहिए वह होगा। अब इस पर दो राय नहीं है।

† [ ] Transliteration in Arabic script.